रेलवे में मानव संसाधन विकास की चुनौतियाँ

भारतीय रेल हमारे देश के ट्रांसपोर्ट सिस्टम का मुख्य अंग है, जिसमें लगभग 14 लाख कर्मचारी कार्यरत हैं, जो रेलवे के लिए महत्त्वपूर्ण मानव संसाधन हैं। भारत के सामाजिक व आर्थिक विकास में रेल की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जो मानव संसाधनों पर काफी निर्भर है। रेल संगठन एक सर्विस ओरिएंटेड संगठन है, जिसमें रेल कर्मचारियों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान है तथा इन सभी कर्मियों का सही प्रकार से विकास व प्रबंधन अति आवश्यक है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, आज भारतीय रेल का मुनाफा दिन पर दिन कम होता जा रहा है, जिसके लिए हम सबको मानव संसाधन विकास पर गम्भीरता से विचार करना होगा, क्योंकि जब तक मानव संसाधन अर्थात रेल कर्मचारियों का उचित व प्रभावी विकास नहीं होगा, तब तक रेलवे के कार्य निष्पादन में अधिक सुधार नहीं आ सकता। किसी भी सर्विस ओरिएंटेड संगठन के लिए सभी कर्मचारियों का विकास अत्यंत आवश्यक है, जिससे वे भौतिक संसाधनों एवं आधुनिक तकनीकी संसाधनों का सही तरीके से इस्तेमाल कर सकें। ग्राहकों के प्रति उनके व्यवहार में सुधार आ सके और उनकी कार्यक्षमता व कार्य निष्पादन में प्रगति हो सके।

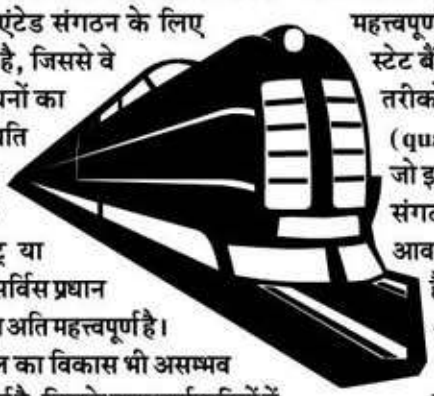

मानव संसाधन यानी कर्मचारी किसी भी राष्ट्र या संगठन के लिए मुख्य अंग हैं और विशेष रूप से सर्विस प्रधान संगठन जैसे रेलवे के लिए कर्मचारियों का योगदान अति महत्त्वपूर्ण है। जब तक इनका पूर्णरूप से विकास नहीं होगा, रेल का विकास भी असम्भव है। मानव संसाधन विकास एक ऐसा तरीका या कार्य है, जिसके द्वारा कर्मचारियों में व्यावहारिक बदलाव लाया जा सकता है और ग्राहकों की देखभाल में सुधार भी लाया जा सकता है, जो उस संगठन के लिए लाभप्रद होगा। यह विकास अनेक गतिविधियों जैसे प्रशिक्षण/ट्रेनिंग, कार्य निष्पादन का मूल्यांकन आदि द्वारा किया जा सकता है। प्रशिक्षण/ट्रेनिंग का विकास में काफी योगदान है। प्रशिक्षण से कर्मचारियों की कार्यक्षमता में, व्यवहार में निश्चित रूप से सुधार लाया जा सकता है। उनके ज्ञान व स्किल्स में प्रगति लाई जा सकती है। प्रशिक्षण सभी स्तर पर आवश्यक है-अधिकारियों, सुपरवाइजरों व अन्य कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना ज़रूरी है और यह प्रशिक्षण निश्चित ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में भली प्रकार से आयोजित किया जा सकता है। हालाँकि रेलवे में सभी स्तरों के लिए ट्रेनिंग का प्रयोजन है, परंतु इसमें और सुधार लाया जाना चाहिये तथा नियमित व समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये। जो प्रशिक्षण की सुविधाएँ रेलवे में हैं, उनका पूर्णरूप से इस्तेमाल होना चाहिये और कर्मचारियों की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये, जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके व अपने कार्यक्षेत्र में और प्रगति कर सके, तभी रेल संगठन का विकास सम्भव है। प्रशिक्षण के अलावा कर्मचारियों के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन (Performance Appraisal) भी मानव संसाधन विकास के लिए आवश्यक है। यह मूल्यांकन कर्मचारियों में उपलब्ध प्रतिभा व क्षमता को पहचानने व इनमें और सुधार लाने में सहायक होगा। इस प्रकार हम यह पाते हैं कि कर्मचारियों के उचित व प्रभावी प्रशिक्षण तथा उनका कार्य मूल्यांकन, व्यक्तिगत विकास व संगठन के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण रोल अदा करते हैं। कुछ संगठनों जैसे रिलायंस, एल एंड टी, स्टेट बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा आदि ने मानव संसाधन विकास के विभिन्न तरीकों को अपनाया है, जिससे इनके कर्मचारियों की जीवन गुणवत्ता (quality of life), कार्य क्षमता व व्यवहार में काफी सुधार आया है, जो इन संगठनों के विकास में मददगार साबित हुआ है। इसी प्रकार रेल संगठन के चहुँमुखी विकास के लिए रेल कर्मचारियों का विकास अति आवश्यक है, जो पहले बताये गये तरीकों व साधनों द्वारा किया जा सकता है। मानव संसाधन विकास में कुछ महत्त्वपूर्ण गुणों का होना आवश्यक है, वे इस प्रकार हैं- ★शालीनता, विनम्रता, सहजता ★दृढ़ता किन्तु निष्पक्षता, कठोरता किन्तु कोमलता ★समूह के साथ एकीकृत होना ★गलतफहमी पैदा न होने देना ★कुशल सम्प्रेषण ★अत्यधिक अहंकार से बचना ★अधीनस्थों से दूरी न रखना ★ कथनी व करनी में अंतर नहीं करना ★मधुर एवं सौम्य व्यवहार ★ कर्मचारियों का सहयोग तथा सद्भाव प्राप्त करना।

इन सभी गुणों को अपनाकर हम सभी रेलकर्मी रेल संगठन के विकास में बहुत सहयोग दे सकते हैं। अंत में यही कहना चाहूँगा कि रेलवे को मानव संसाधन विकास की चुनौतियों को स्वीकार करना होगा, भली प्रकार से रेल कर्मचारियों के विकास पर ध्यान देना होगा, तभी भारतीय रेल संगठन उन्नति व विकास के पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

✍डॉ. के. सी. गुप्ता,
वरिष्ठ प्रोफेसर (स्वास्थ्य प्रबंधन), रेलवे स्टाफ कॉलेज, वडोदरा

हे माधव, तुम न आना!

कुरुसभा में, शतरंज की बिसात पर, शह और मात का खेल जारी है। एक पासा फेंका गया,..और यह शह..! अब और क्या दाँव पे लगाओगे..पाण्डुपुत्र ? प्रश्नों का कोलाहल... मौन के संवाद ...शब्द खामोश..! युधिष्ठिर निष्ठुर, भीम भयभीत, नकुल नयन नीर, सहमें से सहदेव..! ..और पांचाली दाँव पर लगा दी गयी..! ..और ये मात..!!! प्रशासन, अन्धा प्रशासन ! धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण, द्रुपद, जयद्रथ, दुर्योधन, करण..धर्मी-अधर्मी, कर्मी-कुकर्मी, सभी मोहग्रस्त, व्यवस्था की अपंगता के शिकार..दुर्योधन का दुःशासन द्रौपदी का चीर हरण कर रहा है.. उस पल कुरुसभा में एक नारी नहीं, ईमानदारी निर्वस्त्र हो रही थी..!

हे माधव! काश तुम न आते..! घात- प्रतिघात, शह और मात का खेल बदस्तूर जारी है, ''टेण्डर'' पाने की होड़ में, शतरंज की चौपड़ फिर बिछ गयी है, प्यादे बिठा दिये गये हैं, ताकि संकट के समय अपने-अपने राजाओं/आकाओं को बचाने के लिए इन प्यादों का शिखंडी की तरह उपयोग किया जा सके। घोड़े के ढाई कदम, हाथी की सीधी, ऊँट की तिरछी मार, वज़ीर की खतरनाक चालों का सभी को अनुमान है, दिशाएँ चुप हैं! सभी एक अज्ञात शक्ति से दबे हैं। प्रशासन के गलियारे में कई दुर्योधन धन का अनुष्ठान कर रहे हैं, हस्तिनापुर की चौपाल पर येन-केन-प्रकारेण ठेका पाने की चाह में अधर्म, अनैतिकता, भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी का बाज़ार गर्म है। मामा शकुनि मोहरों के मोल लगा रहे हैं, पंगु व्यवस्था की अपंगता के सभी शिकार हो रहे हैं, कुछ अभिमन्यु हैं, जो चक्रव्यूह से बाहर आने को छटपटा रहे हैं। ईमानदारी फिर दाँव पर लगी है..!

हे मनु के वंशजो, हे भारतवंशियो उठो हुंकार उठो, एक प्रबल महाभयंकर अंतिम प्रहार करो, भ्रष्टाचार के इस प्रपंची कुचक्र पर, क्योंकि अश्वत्थामा अभी मरा नहीं है''! हे माधव! तुम न आना... क्योंकि तेरे ऐसे कई अनुचर हैं, जो असुरों, अधर्मों, भ्रष्टाचारियों का संहार करने में हैं सक्षम। तुम तो बस हमारे इस जीवन रथ के सारथि बनकर, हमारी आस्था और विश्वास की लगाम थामे रखना!

✍गिरीश कुमार यादव,
कार्यालय उपायुक्त, मुंबई रेल विकास कॉर्पोरेशन, चर्चगेट